International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-04-2025, Accepted: 21-05-2025, Published: 05-06-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 48-50

संत पलटूदास के वचनों में दार्शनिक चिंतन

डॉ. यशवंत कुमार साव
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मदनलाल साहू शासकीय महावि।लय अरमरीकला, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
संत पलटू ने मूलतः दार्शनिक नहीं थे इसके बाद भी उन्होंने अपने वचनों में भारतीय दर्शन के मूल आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक – इन तीन तापों से मुक्ति का उपाय सुझाया है। मनुष्य माया, मोह के वशीभूत होकर सांसारिक भोग विलास में लिप्त रहकर अपने मूल्यवान जीवन के अनमोल क्षणों को नष्ट करता है। मनुष्य का अंतिम लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति है। जिसके लिए जीवन में सद्गुरु का मिलना आवश्यक है। इस संसार रूपी भवसागर से पार होने के लिए, जीवन–मरण के चक्र से मुक्त होने के लिए सद्गुरु आवश्यक है वही हमें सच्चा मार्ग दिखा सकता है। पलटू ने स्वानुभूति के आधार पर जन साधारण को उनके ही शब्दों में सांसारिक दुखों से मुक्ति का मार्ग बताया है। संत पलटू ने तीर्थ, हवन, पूजा–पाठ, व्रत आदि को आडंबर मानते हुए इसे आत्म ज्ञान के मार्ग में बाधक माना है। साथ ही पलटू के मन में जातिगत ऊंच–नीच, सामाजिक, आर्थिक भेद–भाव के लिए कोई स्थान नहीं है। संसार का प्रत्येक मनुष्य ब्रह्म ज्ञान का अधिकारी है

मूल शब्दः संत, पलटूदास, भारतीय दर्शन, ब्रह्म, मोह, मन, मुक्ति, परमात्मा, चेतना

"संत तो पक्षियों जैसे होते हैं। आकाश पर उड़ते जरूर हैं, लेकिन पदचिह्न नहीं छोड़ते। संतों के संबंध में बहुत कुछ ज्ञात नहीं है। संत का होना ही अज्ञात होना है। अनाम, संत का जीवन अंतर–जीवन है।"[1] संत पलटूदास अज्ञात संत हैं। इनके संबंध में ज्यादा प्रामाणिक जानकारी नहीं है। संत पलटूदास का जन्म लगभग सं. 1780 से 1790 के मध्य फैजाबाद जिले के नंगा जलालपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनकी जाति के संबंध में भी प्रामाणिकता का अभाव है जिस प्रकार कबीर जुलाहे थे तो उनकी पदों में जुलाहे की भाषा का उपयोग हुआ है। वैसे ही पलटूदास ने अपनी बानियों में अपने आप को बनिया कहा है– "ईमन बनिया बान न छोडै। जलमें बनिया थलमें बनिया, घटघट बनिया बोलै।"[2] इस प्रकार उन्हें काँदू बनिया कुल में उत्पन्न माना जाता है। इनके माता पिता के संबंध में भी पुष्ट जानकारी का अभाव है। संत पलटूदास के जीवन के संबंध में भले ही कोई विशिष्ट प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती है, किन्तु संतों की विशेषता के अनुरूप इन्होंने भी अपने गुरु का निरंतर स्मरण किया है। पलटूदास अपने को मिटाकर अपने गुरु में समाहित हो गए हैं। पलटूदास के वचनों से पता चलता है कि गोविंद उनके गुरु थे। गोविंद एक परम संत भीखा के शिष्य थे।

दर्शन शब्द का अर्थ बाह्य–जगत को देखने से न होकर अंतस के दर्शन है। मानव का चंचल मन भौतिक संसाधनों के माध्यम से सुख प्राप्त करना चाहता है, किन्तु मन चंचल होने के कारण और अधिक की मांग करता है। परिणामस्वरूप वह संतुष्ट न होकर दुखी हो जाता है। यही दु:ख मनुष्य को अंतसयात्रा की ओर प्रेरित करता है। वह अपने अनुभव से बाह्य–जगत से दु:खी होकर भीतर के सत्य की खोज में निकल पड़ता है। वह शाश्वत सत्य के दर्शन करना चाहता है। इस दृष्टि से ज्ञान तथा सत्य की खोज करना, उसके वास्तविक स्वरूप को समझने की कला को 'दर्शन' कहते हैं। "किसी वस्तु के तात्विक अर्थात् सच्चे स्वरूप को जान लेना ही दर्शन शब्द का प्रयोजन माना गया है। यह दृश्यमान चराचर विश्व सत्य है कि मिथ्या है, जड़ है कि चेतन है, प्रकाश है कि अंधकार है, सुख–दुख आदि के द्वन्द्व से रहित है अथवा सहित है, इत्यादि विषयों का विचार भी दर्शन शब्दार्थ के अंतर्गत माना गया है।"[3] पलटू ज्यादा पढे–लिखे नहीं थे। कबीर की वाणियों का जिस प्रकार उनके शिष्यों द्वारा संग्रह किया गया है, पलटू के वचनों को भी उनके शिष्यों ने संग्रहीत किया है। संतों ने मनुष्य की मुक्ति के लिए सद्गुरु की महिमा का बखान किया है। बिना सद्गुरु के हम कितना भी शस्त्रों का अध्ययन कर ले हमें मुक्ति नहीं मिल सकती। शास्त्र नाव के समान है और सद्गुरु माझी। केवल नाव मिल जाने से हम भवसागर को पार नहीं सकते। उसके लिए मनुष्य को सद्गुरु रूपी माझी की आवश्यकता पड़ती है। ओशो के वचन हैं– "सद्गुरु का अर्थ होता है: इस किनारे, उस किनारे को जानने वाला मिल जाए। खड़ा हो बाजार में लेकिन अनुभव उसे परमात्मा का हो। खड़ा तो हो तुम्हारे साथ तुम्हारे जैसा ही, लेकिन कुछ हो उसके भीतर जो तुम जैसा न हो; जिसने जीवन की गहराइयाँ देखी हो, पहचानी हो।"[4]

संत पलटू के भी वचन हैं कि– हमें गुरु सोच–विचारकर, चिंतन–मनन करके बनाना चाहिए। जिनके उत्तम कर्म हो, जिनके काम–क्रोध नष्ट हो गये हों, जिन्हे लोभ–मोह स्पर्श भी न कर पाए, जिन्हें स्तुति–निंदा से कोई प्रभाव न पड़े, जिसके लिए शत्रु–मित्र एक समान हो, जो योग और भोग से दूर रहे जिनके अंदर संग्रह करने का भाव न हो, जो त्याग के अंहकार से दूर हो, जो जीवन–मरण, पाप–पुण्य के सांसारिक बंधनों से मुक्त हो।

"बूझिबिचारिगुरुकीजिये, जोकर्मसेन्यारा।
कामक्रोधजिनकेनहीं, नहिंभूखपियासा।
लोभमोहएकौनहीं, नहिंजगकीआसा॥
पलटूजीवन–मुक्तते, साहिबकेलाला॥"[5]

संत पलटू कहते हैं कि केवल शास्त्र अध्ययन, तीर्थ यात्रा, मूर्ति पूजा, जप–तप या माला फेरने से परमात्मा के दर्शन नहीं होते। परम तत्व की प्राप्ति के लिए सद्गुरु चाहिए। बिना सद्गुरु के परमात्मा उपलब्ध नहीं होते। मनुष्य जब अपना सर्वस्व मिटाकर गुरु के चरणों मे अपना सिर रख देता है तब गुरु स्वयं ही उनका कल्याण कर देते हैं।

"तिरथमेंबहुतहमखोजा, उहाँतोनाहिंकुछपाया।
मूरतिकोपूजिपछिताने, नजरमेंनाहिंकुछआया॥
परेजबसंतकेद्वारे, संतनेआपसबकीन्हा।
दासपलटूजभीपाया, गुरुकेचरनचितलाया॥"[6]

संत पलटू शास्त्र अध्ययन की अपेक्षा आचरण की शुद्धता पर बल देते हैं। पलटू पंडितों से कहते हैं कि– पंडितों तुम लोगों ने पढ़ लिखकर क्या कर लिया है? क्या पढ़ने से ज्ञान की प्राप्ति हो गई है? तुम दूसरों को ज्ञान दे रहे हो, किन्तु क्या तुमने स्वयं को पहचान लिया है? क्या तुम्हें आत्म ज्ञान हो गया है? आगे कहते हैं कि तुम अभी भी इंद्रियों के वश में हो, पहले इंद्रियों की वासनाओं को समाप्त करो। तुम अभी भी माया के वशीभूत हो, पहले अपने मन को शांत करो। पलटू यहाँ पर कह रहे हैं कि केवल पढ़ने से कुछ नहीं होगा। मनुष्य को आत्म ज्ञान के लिए मन को शांत करना होगा, अपने इंद्रियों को जीतना होगा, माया से दूर रहना होगा।

"पढ़ि–पढ़िक्यातुमकीन्हापंडित, अपनारूपनचीन्हा।
औरनकोतुमज्ञानबताओ, तुमकोपरैनबूझी।
इन्द्रिनसेआजिजतुमरहते, इन्द्रीमारिगिराओ।
मायाखातिरबकि–बकिमरते, मनअपनोसमुझाओ॥"[7]

ओशो ने संत पलटू के सम्बन्ध में कहा है कि–"बुद्धिमान आदमी शस्त्रों से नहीं होता। बुद्धिमानी जीवन के शास्त्र को अनुभव करने से आती है। गरीब, अमीर, ग्रामीण, शहरी, पढे–लिखे, गैर पढे–लिखे सबके पास एक सा जीवन है, क्योंकि जीवन के अनुभव एक से हैं। पर बहुत थोड़े से लोग इसमें से इत्र को निचोड़ते हैं। जो इत्र निचोड़ते हैं उन्हें पलटू की बात समझ में आ जाएगी।"[8]

संत काव्य में गुरु की अत्यंत महिमा है। सद्गुरु ही साधक शिष्य को आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक – इन तीन तापों से मुक्ति का मार्ग बताता है। पलटू इसके साथ ही आत्म बोध के लिए, परमात्मा की प्राप्ति के लिए मन की शुद्धता, मन की पवित्रता आवश्यक मानते हैं। शुद्ध मन से पवित्र आचरण करने पर मनुष्य जीवन–मरण के चक्र से मुक्त हो सकता है– मन रूपी चादर मैला हो गया है, उसमें त्रिगुण सत, रज, और तम गुण के कर्मों के दाग पड़े हैं। पूर्ण सतगुरु धोबी है जो ज्ञान रूपी साबुन से मन रूपी चादर के मैल को धोकर पवित्र बना देंगे। ऐसे पवित्र चादर को ओढ़कर जीवन आचरण करने पर पुनः संसार–सागर में नहीं आना होगा। इस प्रकार यहाँ पर पलटू ने सद्गुरु के साथ सद्संगति करके ज्ञान प्राप्ति उपरांत सदाचरण से जीव की मुक्ति का उपाय प्रतिपादित किया है।

"चादरलेहुधुवाइहै, मनमैलभयाहै।
तिरगुनदाग़परयोचादरमें, मलि–मलिदागछुड़ाईहै॥
निरखि–परखिकैचादरधोइनि, साबुनज्ञानलगाईहै॥
पलटूदासओढ़िचलुचादर, बहुरिनभवजलआईहै॥"[9]

मनुष्य के जीवन के साथ ही मृत्यु निश्चित हो जाती है। शाश्वत सत्य है तो केवल परमात्मा है। संत पलटू ने भी जीवन के क्षणभंगुरता का बखान किया है। पलटू मनुष्य को गंवार कहते हुए चेता रहे हैं, चेतना जागृत करने का प्रयास कर रहे हैं। पलटू कहते है कि कितने दिन का तुम्हारा यह जीवन है? तुम्हारा जीवन कच्ची मिट्टी के ढेले के समान है जिसको फूटने में देर नहीं लगती। मनुष्य का जीवन रेत की दीवार, घास के ऊपर शीत के समान है जो हवा लगते ही गिर जाएगा। इसके बाद भी मनुष्य जीवन भर धन–दौलत संग्रह करते में माया–मोह के वशीभूत होकर असत्य आचरण में निमग्न रहता है।

"कैदिनकातोराजियनारे, नरचेतुगँवार।
काचीमाटीकैघैलाहो, फूटतनहिंबेर।
पलटुदासउड़िजैबहुहो, जबदेइहिदाग॥"[10]

मनुष्य का तन पानी में रखा हुआ बताशा के समान है जिसका कुछ समय पश्चात घुलकर नष्ट होना तय है। चाहे कोई सम्राट हो फकीर खाली हाथ इस संसार में आता है और खाली हाथ ही इस संसार से विदा होता है। मनुष्य इस संसार से मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं ले जा सकता। सभी सगे–संबंधी अंत समय में यहीं छूट जाएंगे। मनुष्य इसके बाद भी सांसारिक मोह माया में उलझा रहता है। मृत्यु के बाद केवल हमारे कर्म ही हमारे साथ जाएंगे अन्य सभी यहीं इसी संसार में छोड़ना पड़ेगा।

"पानीबीचबतासासाधो, तनकायहीतमासाहै।
मुट्ठीबाँधेआयाबंदा, हाथपसारेजाताहै।
नाकुछलायानलेजायगा, नाहकक्योंपछिताताहै॥
नेकीबदीतेरेसंगचलेगी, औरसबझूठीबाताहै॥"[11]

पूर्ण ब्रह्म मनुष्य के भीतर ही है किन्तु मनुष्य अज्ञानतावश उसे बाहर के संसार में खोजता– फिरता है। जिस प्रकार दूध में घी रहता है, किन्तु उसे मथने पर ही हम प्राप्त कर सकते है। पुष्प के सुगंध को प्रयत्न से अलग कर सकते हैं। मेहंदी में लाली और लकड़ी में अग्नि छिपी होती है। धरती के जल को खोदकर ही प्राप्त किया जा सकता है। उसी प्रकार पूर्ण ब्रह्म के लिए हमें अपने अंतस में प्रवेश करना होगा। पलटू का ब्रह्म निर्गुण, निराकार, शाश्वत, अखंड और सर्वव्यापी है। यह संसार के कण–कण में उसी प्रकार व्याप्त है, जिस प्रकार फूल में सुगंध, काठ में अग्नि एवं दूध में घी विद्यमान रहता है।

"तोमेंहैतेरारामबैरागिन, भूलिगयातोहिधाम।
घिवज्योंरहैदूधकेभीतर, मथेबिनुकैसेपावै।
पूरनब्रह्मरहैतोहीमें, क्योंतूफिरैउदासी।
पलटूदासउलटिकैताकै, तूहीहैअबिनासी॥"[12]

इसी प्रकार संत पलटू कहते हैं– पूर्ण ब्रह्म तीर्थ यात्रा करने, जंगल में खोजने या ग्रंथों में ढूँढने से नहीं मिलते। कहीं पूर्ण ब्रह्म लिखे हुए कागज में छिप सकते हैं। जो हम उन्हें ग्रंथों में खोज रहे हैं। परमात्मा ने हमें दर्शन के लिए आंतरिक चक्षु प्रदान किया है। जब हम आंतरिक चक्षु से दर्शन करेंगे तब कण–कण में परमात्मा के दर्शन होंगे।

"पूरनब्रह्मरहैघटमें, सठतीरथकाननखोजनजाई।
ढूँढ़तअंधगरंथनमें, लिखिकागदमेंकहुँरामलुकाही॥"[13]

पलटू दास कहते हैं कि मन के विकार काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह को अपने वश में करके मैदान में खड़ा हो गया हूँ, मैंने परमात्मा के लिए शीश दे दिया है अर्थात इन पाँच विकारों को काटकर फेंक दिया है। अब किसी का डर नहीं है।

"काम–क्रोध–मद–लोभकैदकर, मनकरठौरेमरनाहै॥
सीसदिहासाहिबकेऊपर, किसकीडेरअबडेरनाहै।"[14]

जो सतनाम से जाना जाता है वह आत्मा है। साधक को आत्म बोध होने पर अंहकार तिरस्कृत हो जाता है। अंहकार शून्य होने पर वह मरितु से पार हो जाता है। वह आत्म स्वरूप में स्थित होने पर अमरत्व को प्राप्त कर लेता है।

"मीठबहुतसतनामहैपियतनिकारैजान॥
पियतनिकारैजानमरैकीकरैतयारी।
सोवहप्यालापियैसीसकोधरैउतारी॥
फिरिवहहोवैअमरमुएपरउठिकैजागै॥"[15]

सतनाम संतों का प्रेमी है, और संत सतनाम के प्रेमी हैं। संत ही सत्नाम के अर्थस्वरूप आत्मा का बोध कराते हैं। कोई चाहे जीतने जप, तप, तीर्थ, व्रत करे बिना संत का सहारा लिए आत्मबोध नहीं होगा।

"संतसनेहीनामहैनामसनेहीसंत ॥
नामसनेहीसंतनामकोवहीमिलावैं।"[16]

संत पलटू कहते है कि आत्म–प्रेम सहज नहीं होता। वह तो अपना सिर अपने हाथ से निकालकर गुरु के चरणों में रख देना होता है। यह कोई मिठाई खाना नहीं है अपितु परमात्मा के प्रेमी का वास दिन–रात शूली पर रहता है।सच्चा प्रेमी कभी रोता नहीं है न वह चिंतित रहता है, अपितु सदैव आनंदित रहता है।

"सीसउतारैहाथसेसहजआसिकीनाहिं ॥
आसिककोदिनरातरहैसूलीपरबासा ॥
तिलभररक्तनमांसनहींआसिककोरोना ॥"[17]

ओशो के विचार है कि– "तुम्हें दुख का पता चलता है क्योंकि भीतर अंहकार का घाव है। जिस दिन अंहकार गया उस दिन कोई दुख पता नहीं चलता। परमात्मा दें, समाज दें, लोग दें, अपने दें, पराये दें, कहीं से भी आए पता नहीं चलता। एक अंहकार चल जाए, फिर तो दुख भी सौभाग्य है।"[18]
निष्कर्ष रूप में पलटू के वचनों से यह ज्ञात होता है कि उनके वचनों में दार्शनिक तत्व वि।मान है। पलटू ने अल्प शिक्षित होते हुए भी अपने अनुभव के आधार पर गुरु की महत्ता प्रतिपादित करते हुए मनुष्य को त्रिताप से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया है। पलटू ने बाह्य आडंबर का विरोध किया है। इस भौतिक संसार में केवल दुख है। अत्यान्तिक आनंद आत्म बोध से उपलब्ध हो सकता है। पलटू के मन में किसी के लिए कोई भेदभाव नहीं है। सभी मनुष्य आत्म ज्ञान प्राप्त करके संसार सागर से पार हो सकता है।

संदर्भ

1. ओशो: अजहू घेत गंवार; डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, पृ.क्र.–10
2. अभिलाषा दास: पलटू साहेब की बानी, पलटू प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012, पृ.क्र.–437
3. ज्वाला प्रसाद गौड़: सांख्यकारिका; चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1984, पृ.क्र.–1
4. ओशो: अजहू घेत गंवार; डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, पृ.क्र.–19
5. अभिलाषा दास: पलटू साहेब की बानी, पलटू प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012, पृ.क्र.––385
6. वही: पृ.क्र.–442
7. वही: पृ.क्र.–441
8. ओशो: अजहू घेत गंवार; डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, पृ.क्र.–55
9. अभिलाषा दास: पलटू साहेब की बानी, पलटू प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012, पृ. क्र.–386
10. वही: पृ.क्र.–404
11. वही: पृ.क्र.–407
12. वही: पृ.क्र.–388
13. वही: पृ.क्र.–381
14. वही: पृ.क्र.–419
15. वही: पृ.क्र.–16
16. वही: पृ.क्र.–17
17. वही: पृ.क्र.–56
18. ओशो: अजहू घेत गंवार; डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, पृ.क्र.–94